• बाल कविता...

सड़क...

कहां-कहां से आतीं सड़कें
और कहां को जाती हैं,
दौड़-दौड़कर जाती हैं ये
दौड़-दौड़कर आती हैं।
पर शायद यह सही नहीं है
सड़क वहीं पर रहती है,
दौड़ा तो करते हैं हम-तुम
सड़क सभी कुछ सहती है।
बोलो-बोलो, सड़क, तुम्हारी
छाती पर है बोझा कितना?
समझ न पाओगे तुम भैया-
बोझा है छाती पर इतना!
इतना बोझा ढोकर भी मैं
आह नहीं, पर करती हूं,
मेरा तप बस यही-यही है-
सोच, सभी कुछ सहती हूं।
मैं बोल-ओ सड़क, तुम्हारी
कठिन तपस्या भारी है,
तुमसे ही जीवन में गति है
जग इसका आभारी है!
बोली सड़क-याद यह रखना
नहीं रौंदना मुझको तुम,
नहीं तोड़ना, नहीं फोड़ना
तब जी लेंगे मिल हम-तुम!
तब से भाई, जान गया हूं
बड़े काम की चीज सड़क है,
जो इस पर कूड़ा फैलाते
उनसे होती मुझे रड़क है!

-प्रकाश मनु

• चुटकुले...

भिखारी– जनाब मैं कोई मामूली भिखारी नहीं हूं..
मैंने रुपये कमाने के 100 तरीके नाम की एक किताब लिखी है..
राहगीर– तो फिर तुम भीख क्यों मांगते हो?
भिखारी– क्योंकि ये उस किताब में बताया गया सबसे आसान तरीका है...

टीचर – खुशी का ठिकाना ना रहा इस मुहावरे का क्या मतलब है?
पप्पू – खुशी घर वालों से छिपकर रोजाना अपने बॉयफ्रेंड से मिलने जाती थी एक दिन उसके पापा ने बॉयफ्रेंड के साथ देख लिया और खुशी...

• आप जानते हैं...

मास्क पहनना जरूरी...

दुनिया के साथ भारत में कोरोना के कहर से लोग घरों में बंद है और लॉडाउन का पालन कर रहे हैं। बाहर निकलने वाले लोग एहतियात बरतते हुए मास्क व गल्ब्ज आदि पहन कर निकल रहे हैं। भारत समेत कई और देशों में भी धीरे-धीरे लॉकडाउन खोलना शुरु किया है और लोगों से सावधानी बरतने को कहा है। लोगों से कहा गया है कि वे सफाई का ध्यान रखें, हाथों को नियमित तौर पर साफ करते रहें, मास्क पहनें और एक-दूसरे के संपर्क में कम आएं यानी सोशल डिस्टेंसिंग का पूरा पालन करें। दुनिया के कई राज्यों ने मास्क पहनना जरूरी कर दिया है। बहुत से देशों में मसलन चीन, हांगकांग, ताइवान, दक्षिण कोरिया और जापान में मास्क पहनना एक सोशल कल्चर बन गया है और अगर आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि ज्यादातर लोगों ने मास्क पहन रखा है। जो लोग मास्क का इस्तेमाल कर रहे हैं उनका तर्क है कि यह पहनना बहुत जरूरी है। उनका कहना है कि हो सकता है कि जो लोग स्वस्थ लग रहे हों उनमें भी वायरस हो। लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि जो लोग स्वस्थ हैं फिर भी मास्क का इस्तेमाल कर रहे हैं। अगर आप स्वस्थ हैं तो उस स्थिति में आपको मास्क पहनने की जरूरत तभी है जब आप किसी कोरोना वायरस संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हों। अगर आपको सर्दी है या फिर खांसी आ रही है, गले में खराश है और थकान है तो मास्क पहनें और घर पर ही रहें।

कुछ लोगों को लगता है कि मास्क पहन लिया तो सुरक्षित हो गए लेकिन ऐसा नहीं है। मास्क पहनना कभी कारगर साबित होगा जब आपके हाथ भी साफ रहें। समय-समय पर अपने हाथ साफ करते रहें और हाथ साफ करने के लिए एल्कोहॉल बेस्ड हैंड सोप या सेनेटाइजर का इस्तेमाल करें। अगर आप मास्क पहन रहे हैं तो सबसे जरूरी ये है कि आपको इसे पहनने और इस्तेमाल करने का तरीका पता हो। मास्क पहनने से पहले अपने हाथों को जरूर साफ कर लें।

• लोक-कथा

बुद्धिमान साधु...

एक साधु घने जंगल से होकर जा रहा था। उसे अचानक सामने से बाघ आता हुआ दिखाई दिया। साधु ने सोचा कि अब तो उसके प्राण नहीं बचेंगे। यह बाघ निश्चय ही उसे खा जाएगा। साधु भय के मारे कांपने लगा। फिर उसने सोचा कि मरना तो है ही, क्यों न बचने का कुछ उपाय करके देखे ।

साधु ने बाघ के पास आते ही ताली बजा-बजाकर नाचना शुरू कर दिया। बाघ को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला, ओ रे मूर्ख ! क्यों नाच रहे हो? क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं तुम्हें कुछ ही देर में खा डालूंगा।

साधु ने कहा, -हे बाघ, मैं प्रतिदिन बाघ का भोजन करता हूं। मेरी झोली में एक बाघ तो पहले से ही है किंतु वह मेरे लिए अपर्याप्त है। मुझे एक और बाघ चाहिए था। मैं उसी की खोज में जंगल में आया था। तुम अपने आप हो मेरे पास आ गए हो इसीलिए मुझे खुशी हो रही है।

साधु की बात सुन कर बाघ मन-ही-मन कुछ डरा। फिर भी उसे विश्वास नहीं हुआ। उसने साधु से कहा, तुम अपनी झोली वाला बाघ मुझे दिखाओ। यदि नहीं दिखा सके तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।

साधु ने उत्तर दिया, ठीक है, अभी दिखाता हूं। तुम जरा ठहरो, देखो भाग मत जाना।

इतना कहकर साधु ने अपनी झोली उठाई। उसकी झोली में एक शीशा था। उसने शीशे को झोली के मुख के पास लाकर बाघ से कहा, देखो, यह रहा पहला वाला बाघ।

बाघ साधु के पास आया। उसने जैसे ही झोली के मुंह पर देखा, उसे शीशे में अपनी ही परछाई दिखाई दी । इसके बाद वह गुर्राया तो शीशे वाला बाघ भी गुर्राता दिखाई दिया। अब बाघ को विश्वास हो गया कि साधु की झोली में सचमुच एक बाघ बंद है। उसने सोचा कि यहां से भाग जाने में ही कुशल है। वह पूंछ दबाकर साधु के पास से भाग गया।

वह अपने साथियों के पास पहुंचा और सब मिल कर अपने राजा के पास गए। राजा ने जब सारी घटना सुनी तो उसे बहुत क्रोध आया। वह बोला, तुम सब कायर हो। कहीं आदमी भी बाघ को खा सकता है। चलो, मैं उस साधु को मजा चखाता हूं।

बाघ का सरदार दूसरे बाघों के साथ साधु को खोजने चल पड़ा। इसी बीच साधु के पास एक लकड़हारा आ गया था। साधु उसे बाघ वाली घटना सुना रहा था। तभी बाघों का सरदार वहां पहुंचा। जब लकड़हारे ने बहुत से बाघों को अपनी ओर आते देखा तो डर के मारे उसकी घिग्घी बंध गई। वह कुल्हाड़ी फेंक कर पेड़ पर चढ़ गया। साधु को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था। वह पेड़ के पीछे छिप कर बैठ गया।

जो बाघ साधु के पास से जान बचा कर भागा था, वह अपने सरदार से बोला, देखो सरदार सामने देखो, पहले तो एक ही साधु था, अब दूसरा भी आ गया है। एक नीचे छिप गया है और दूसरा पेड़ के ऊपर,चलो भाग चलें।

बाघों का सरदार बोला, मैं इनसे नहीं डरता। तुम सब लोग इस पेड़ को चारों तरफ से घेर लो, ताकि ये दोनों भाग न जाएं। मैं पेड़ के पास जाता हूं।

इतना कह कर बाघों का सरदार पेड़ की तरफ बढ़ने लगा। साधु और लकड़हारा अपनी-अपनी जान की खैर मनाने लगे। अचानक लकड़हारे को एक चींटी ने काट खाया। जैसे ही वह दर्द से तिलमिलाया कि उसके हाथ से टहनी छूट गई। वह घने पत्तों और टहनियों से रगड़ खाता हुआ धड़ाम से नीचे आ गिरा। जब साधु ने उसे गिरते हुए देखा तो वह बहुत जोर से चिल्लाया, बाघ के सरदार को पकड़ लो। जल्दी करो, फिर यह भाग जाएगा।

धड़ाम की आवाज और साधु के चिल्लाने से बाघों का सरदार डर गया। उसने सोचा कि यह साधु सचमुच ही बाघों को खाने वाला है। वह उलटे पैरों भागने लगा। उसके साथी भी उसे भागता हुआ देखते ही सिर पर पैर रखकर भाग गए।

-समाप्त

साधु ने बाघ के पास आते ही ताली बजा-बजाकर नाचना शुरू कर दिया। बाघ को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला, ओ रे मूर्ख ! क्यों नाच रहे हो? क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं तुम्हें कुछ ही देर में खा डालूंगा।

साधु ने कहा, –हे बाघ, मैं प्रतिदिन बाघ का भोजन करता हूं। मेरी झोली में एक बाघ तो पहले से ही है किंतु वह मेरे लिए अपर्याप्त है...

• जानकारी...

द्रास...

क्या आपको मालूम है कि भारत में एक ऐसी जगह है, जो पूरे देश में दूसरा सबसे ठंडा शहर है और वहां पड़ती है खून जमा देने वाली ठंड। समुद्र तल से लगभग 3280 मीटर ऊंचाई पर बसा एक खूबसूरत और बेहद ठंडा शहर है द्रास। इसे 'लद्दाख का प्रवेश द्वार' भी कहा जाता है। द्रास जम्मू कश्मीर के कारगिल जिले में पड़ता है। सर्दियों में यहां का तापमान –45 डिग्री तक आ जाता है। ये संसार का दूसरा सबसे ठंडा स्थान है। साल 1995 की सर्दियों में द्रास में –60 डिग्री तापमान चला गया था। इस वजह से द्रास को दुनिया का दूसरा सबसे ठंडा प्रदेश माना जाता है। जहां लोग रहते हैं। द्रास में 1021 लोग रहते हैं, जिस में 64 प्रतिशत पुरुष और बाकी 36 प्रतिशत महिलाएं हैं। द्रास, कारगिल से सिर्फ 56 किलोमीटर दूर है। द्रास में रहने वाले लोगों को दर्द कहा जाता है और वहां पर दर्दीक भाषा, शीना बोली जाती है। सबसे ठंडा प्रदेश होने की वजह से ये पर्यटकों का स्थल भी है।

• संडे की छुट्टी...

जब भारत में ब्रिटिश शासन किया करते थे तब मिल मजदूरों को सातों दिन काम करना पड़ता था, उन्हें कोई भी छुट्टी नहीं मिलती थी। हर रविवार को ब्रिटिश अधिकारी चर्च जाकर प्रार्थना करते थे परन्तु मिल मजदूरों के लिए ऐसी कोई परम्परा नहीं थी। उस समय श्री नारायण मेघाजी लोखंडे मिल मजदूरों के नेता थे, उन्होंने अंग्रेजों के सामने साप्ताहिक छुट्टी का प्रस्ताव रखा और कहा की 6 दिन काम करने के बाद सप्ताह में एक दिन अपने देश और समाज की सेवा करने के लिए भी मिलना चाहिए।